Date – 25/08/2020

Dr. Sanehlata
Asst. Professor (Guest faculty)
Dept. of Philosophy
Women's College, Samastipur
Email Id. – Snehababli 1987 @ gmail.com
Cont. no. – 8409587640

Class – B.A. – II (Hons.)

Topic – Theory of Inference : Navya - Nyaya

Scanned with CamScanner

नव्य न्याय के प्रवर्तक गंगेश उपाध्याय ने "तत्वचिंतामणि" नामक अपनी पुस्तक में लिखता है कि व्याप्तिविशिष्ट पक्षधर्मताज्ञान से जो ज्ञान उत्पन्न होता है, उसे अनुमिति कहते हैं और उसके कारण को अनुमान कहा जाता है। इस परिभाषा के विश्लेषण से पता चलता है कि —

(क) अनुमान अनुमिति का कारण है।

(ख) व्याप्ति और पक्षधर्मता ज्ञान साथ-साथ होता है, अर्थात् वे संयुक्त ज्ञान है।

(ग) उक्त संयुक्त ज्ञान ही अनुमान का आधार है।

स्पष्ट रूप से गंगेश ने अनुमान के लिए व्याप्तिज्ञान और पक्षधर्मता ज्ञान को अनिवार्य तत्व माना है। उन्होंने अनुमान को "लिंग विषयक परामर्श" कहा है, "परामृश्यमान लिंग" नहीं। इसका तात्पर्य है कि अनुमान के लिए उपर्युक्त दो तत्वों के अतिरिक्त 'परामर्श' का होना आवश्यक है। परामर्श के कारण ही अनुमान 'अनुमितिकरण' होता है। गंगेश की उक्त परिभाषा को स्पष्ट करते हुए रघुनाथ शिरोमणि, जिन्होंने 'तत्वचिंतामणि' पर 'दीधिति' नामक टीका लिखती है, ने कहा है कि यदि व्याप्तिविशिष्ट और पक्षधर्मी पदों में कर्मधारय समास माना जाए तो व्याप्तिविशिष्टत्व और पक्षधर्मत्व इन दोनों के समानाधिकरण

से उत्पन्न ज्ञान अनुमिति कहलाता है। समानाधिकरण का तात्पर्य वह आधार है जिस पर व्याप्तिविशिष्टत्व और पक्षधर्मत्व दोनों पाए जाते हैं। ऊपर जिन दो उदाहरणों को लिया गया है, उनमें संसार और पर्वत समानाधिकरण हैं, क्योंकि मनुष्य और मृत्यु का आधार संसार है तथा धुआँ और आग का आधार पर्वत है। एक ही आधार या पक्ष में हेतु और साध्य हो, तो उस आधार या पक्ष को समानाधिकरण कहते हैं। व्याप्तिविशिष्टत्व हेतु और साध्य के संबंध में निहित है, तो पक्ष में हेतु का होना पक्षधर्मत्व है। दोनों ही एक ही आधार 'संसार' और 'पर्वत' पर आश्रित हैं। इसी एक आधार पर 'मृत्यु' और 'आग' का ज्ञान प्राप्त किया जाता है। यही अनुमिति है। इस प्रकार दीधीतिकार के अनुसार अनुमिति पक्ष में अज्ञात साध्य का ज्ञान है, जिसका आधार व्याप्तिविशिष्ट हेतु-साध्य संबंध है का प्रत्यक्ष ज्ञान तथा ~~पक्षधर्मत्व~~ पक्षधर्मत्वविशिष्ट हेतु का प्रत्यक्ष ज्ञान है। व्याप्तिविशिष्ट पक्षधर्मत्व विशिष्ट हेतु-ज्ञान को ही 'लिंग परामर्श' या 'परामर्श' कहा जाता है। केशव मिश्र के अनुसार लिंग परामर्श ही अनुमान है। अन्नंभट्ट ने भी "तर्कसंग्रह" नामक अपनी पुस्तक में "परामर्श से उत्पन्न ज्ञान को अनुमिति" कहा है तथा "अनुमिति के कारण को अनुमान" की संज्ञा दी है।

गौतम से लेकर जयंत और गंगेश से लेकर अन्नंभट्ट तक अनुमान की जो परिभाषा दी गई है, उनमें सामान्य बात यह है कि अनुमान अनुमिति का कारण है जिसका प्रमुख तत्व हेतु-साध्य में व्याप्तिसंबंध तथा हेतु की पक्षधर्मता एवं तृतीय लिंग परामर्श अथवा परामर्श है।

Scanned with CamScanner